Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

गुरु घासीदास के व्यक्तित्व एवं उपदेशों का छत्तीसगढ़ी संस्कृति पर प्रभाव

[1]चंद्रहास, [2]डॉ. दिवाकर तिवारी
[1,2]सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय

शोध सारांश

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना भारतीय लोक-संस्कृति की उस समृद्ध परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें जीवन, श्रम, समानता और मानवीय गरिमा को केंद्रीय महत्व प्राप्त है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृति हमेशा से लोकजीवन, सामाजिक समानता और मानवीय मूल्यों पर टिकी रही है। इस संस्कृति को सही दिशा देने में गुरु घासीदास जी का योगदान अत्यंत विशिष्ट एवं गरिमामय है,। उन्होंने अपने विचारों और उपदेशों से समाज को एक नई सोच दी। गुरु घासीदास जी ने "मनखे-मनखे एक समान"[1] का संदेश देकर यह समझाया कि सभी मनुष्य बराबर हैं, चाहे उनका समाजिक दर्जा कुछ भी हो। उनके उपदेशों का असर छत्तीसगढ़ के आम लोगों के जीवन में साफ दिखाई देता है। उन्होंने नशा, भेदभाव और अंधविश्वास का विरोध किया और सादा, ईमानदार तथा नैतिक जीवन जीने की सीख दी। उनके उपदेशों ने लोगों को आपस में प्रेम, भाईचारा और सम्मान के साथ रहने की प्रेरणा दी। गुरु घासीदास जी की शिक्षाओं ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय आधार भी दिया। आज भी उनके विचार लोकजीवन में जीवित हैं और समाज को सही मार्ग दिखा रहे हैं।

कूटशब्द

गुरु घासीदास, छत्तीसगढ़ी लोकजीवन, उपदेश, प्रतीक, सत्कर्मी, नैतिक मूल्य, सत्य, परस्पर सहयोग, करुणा, सामाजिक, अनुशासन, मानवीय मूल्य, सामाजिक समरसता।

परिचय

गुरु घासीदास जी का जन्म सन 1756 में छत्तीसगढ़ के बलौदा बाजार जिले के गिरोदपुरी में उस समय हुआ जब तत्कालीन समाज सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, रूप से कठिन दौर से गुजर रहा था समाज में तरह-तरह की बुराइयों ने अपनी जड़े आम जनमानस में मजबूत कर ली थी 'ऊंच-नीच, जातीय भेदभाव, छुआ-छूत, विधवा-विवाह, मानवता की उपेक्षा, मास-भक्षण और धार्मिक आडंबर के नाम पर बलि प्रथा, कहीं-कहीं नर बलि तरह-तरह के शोषण, व झूठ'[2] का बोलबाला था समाज अधर्म की मार्ग पर चल पड़ा था उस समय समाज को सत और सत्य की शिक्षा दी मानवता, समानता का उपदेश दिया लोगों के मन में करुणा दया क्षमा का भाव जगाया लोगो की मुश्किलों का समाधान करते हुए लोगो को जागृत किया तथा समाज को मुख्य धारा में जुड़ने के लिए सतमार्गी और सत्कार्मी होने की सलाह दी।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

आओ मानव मानवी चले संत के पथ।
इस पथ चलते सत पुरुष इस पथ चलते संत [3] ।।

गुरु घासीदास का व्यक्तित्व और सांस्कृतिक दृष्टि

गुरु घासीदास जी का व्यक्तित्व बहुत ही सरल, त्यागपूर्ण और करुणा से भरा हुआ था। वे किसी दिखावे में विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि जैसा कहते थे वैसा ही जीवन जीते थे। आम लोगों के बीच रहकर उन्होंने समाज को सही रास्ता दिखाया। उनका मानना था कि अच्छा इंसान बनने के लिए बड़े कर्मकांड नहीं, बल्कि अच्छा आचरण जरूरी है। छत्तीसगढ़ी संस्कृति में जो सादगी, मेहनत का सम्मान और प्रकृति के साथ तालमेल दिखाई देता है, उस पर गुरु घासीदास जी के विचारों का गहरा असर है। उन्होंने लोगों को मेहनत से जीवन जीने, ईमानदारी अपनाने और सबके साथ समान व्यवहार करने की सीख दी। गुरु घासीदास जी ने संस्कृति को केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवन के अच्छे मूल्यों से जोड़ा। इसी वजह से उनका व्यक्तित्व आज भी छत्तीसगढ़ की संस्कृति को दिशा देता है।

सतनाम धर्म की स्थापना प्रतीक व उद्देश्यः

गुरु घासीदास जी ने जिस समय सतनाम पंथ की स्थापना की, उस समय समाज अनेक कुरीतियों, अंधविश्वासों और अधर्म से ग्रसित था, लोगों के बीच आपसी भेदभाव, ऊँच-नीच और अन्याय का बोलबाला था तथा निचले और कमजोर तबके के लोगों को सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार नहीं मिल पा रहा था। समाज बिखरा हुआ था और जनमानस दिशाहीन हो चुका था। ऐसे कठिन समय में गुरु घासीदास जी ने लोगों को जागरूक करने का कार्य किया और सरल, सहज तथा आम बोलचाल की भाषा में सत्य, अहिंसा, समानता और मानवता का संदेश दिया, ताकि हर व्यक्ति उसे समझ सके और अपने जीवन में उतार सके। उन्होंने यह समझाया कि सच्चा धर्म वही है जो इंसान को इंसान से जोड़ता है, न कि उसे तोड़ता है। निचले तबके के लोगों के कल्याण के लिए उन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना की, जिससे उन्हें आत्मसम्मान, पहचान और सामाजिक बराबरी का भाव मिला। सतनाम पंथ के माध्यम से गुरु घासीदास जी ने समाज को यह संदेश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं, सभी में एक ही सत् का वास है और किसी के साथ जन्म, जाति या वर्ग के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। इस प्रकार सतनाम पंथ न केवल एक धार्मिक मार्ग बना, बल्कि मानवता, करुणा, भाईचारे और सामाजिक न्याय का सशक्त आंदोलन बनकर समाज को नई चेतना और नई दिशा देने वाला सिद्ध हुआ।

प्रतीक

सतनाम पंथ के प्रतीक मानव जीवन को सही दिशा देने वाले सरल और गहरे अर्थ रखते हैं। "जयस्तंभ समानता, भाईचारे और न्याय का प्रतीक है, जो यह संदेश देता है कि समाज में सभी लोग बराबर हैं और किसी के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए"[4]। यह हमें आपसी प्रेम, एकता और न्यायपूर्ण व्यवहार का मार्ग दिखाता है। ध्वजा सहिष्णुता और सहानुभूति का प्रतीक है, जो यह सिखाती है कि हमें दूसरों के विचारों, विश्वासों और भावनाओं का सम्मान करना चाहिए तथा दुख-सुख में एक-दूसरे के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

साथ खड़े रहना चाहिए। तीन लोहे के छल्ले प्रेम, करुणा और दया का प्रतीक हैं, जो मानव हृदय में मानवता, सहयोग और परस्पर संवेदना के भाव को मजबूत करते हैं। वहीं सराई का लकड़ी का खंभा पंचशील का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें मजबूती, सादगी, प्रकृति से जुड़ाव, श्रम और सत्यनिष्ठ जीवन का संदेश छिपा है। इन सभी प्रतीकों के माध्यम से सतनाम पंथ सरल, सच्चा, मेहनती और मानवतावादी जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

उद्देश्य

सतनाम पंथ की स्थापना का मुख्य उद्देश्य समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करना और लोगों के जीवन में अच्छाई को स्थापित करना था। उस समय "समाज में अशांति, आपसी वैमनस्य, भेदभाव, हिंसा और स्वार्थ जैसी अनेक बुराइयाँ फैल चुकी थीं"[5]। गुरु घासीदास जी ने इन्हें समाप्त करने के लिए शांति, एकता, दया, करुणा, क्षमा और प्रेम जैसे मानवीय मूल्यों का प्रसार किया। उन्होंने लोगों को यह समझाया कि जब तक मन में प्रेम और दया नहीं होगी, तब तक सच्चा धर्म नहीं आ सकता। सतनाम पंथ के माध्यम से उन्होंने यह प्रयास किया कि जनमानस इन आदर्शों और उपदेशों को केवल सुने ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने मन, बुद्धि और आत्मा में पूरी तरह धारण करे और अपने दैनिक जीवन में अपनाए। इसका उद्देश्य यह था कि हर व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चले, सतमार्गी बने, सही ज्ञान को अपनाए, अच्छे कर्म करे और अच्छे गुणों को अपने जीवन में उतारे। जब व्यक्ति सतज्ञानी, सतकर्मी और सतगुणी बनता है, तब उसका जीवन पवित्र होता है और वह आत्मिक शांति की ओर बढ़ता है। इसी मार्ग पर चलते हुए संपूर्ण मानव जाति मोक्ष, अर्थात जीवन के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकती है।

गुरु घासीदास जी के उपदेशः

गुरु घासीदास जी ने छतीसगढ़ी समाज को प्रमुख निम्न उपदेश दिए :

- "सत्य के मार्ग को कभी नही छोड़ना चहिए हमेशा सत्य पर अडिग रहना चाहिए।
- नशीले पदार्थो व मांस का सेवन नहीं करना चाहिए।
- बेजुबान जीवो की हत्या नहीं करनी चाहिए मास भक्षण नहीं करना चाहिए।
- कभी चोरी नहीं करनी चाहिए।
- हमेशा सत्य वचन बोलना चाहिए झूठ का सहारा नहीं लेना चहिए।
- धूप मे गायों को हलो में बांधकर खेतो को नहीं जोतना चाहिए ।
- धार्मिक आडंबर मे न पड़कर सतकर्म करना चहिए"[6] ।

छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति में बराबरी और भाईचारा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

गुरु घासीदास जी का सबसे बड़ा और सशक्त संदेश "मनखे-मनखे एक समान"[7] था, । इस विचार ने छत्तीसगढ़ी समाज को सोचने और समझने का एक बिल्कुल नया नजरिया दिया। पहले समाज में जाति, ऊँच-नीच, छुआछूत और अमीरी-गरीबी के आधार पर लोगों को अलग-अलग देखा जाता था, जिससे आपसी दूरी और भेदभाव बढ़ता जा रहा था। गुरु घासीदास जी ने साफ शब्दों में कहा कि सभी इंसान एक समान हैं और किसी को भी जन्म, जाति या धन के आधार पर छोटा या बड़ा नहीं माना जाना चाहिए। यह बात आम लोगों के दिल को छू गई, क्योंकि इसमें सच्चाई और इंसानियत दोनों थीं। इस सोच ने समाज में फैली बुराइयों को सीधी चुनौती दी और लोगों को अपने व्यवहार पर सोचने के लिए मजबूर किया। धीरे-धीरे इसका असर छत्तीसगढ़ी समाज और संस्कृति पर गहराई से दिखने लगा। लोगों के बीच आपसी सम्मान, भाईचारा और मिल-जुलकर रहने की भावना मजबूत हुई। गाँव-समाज में एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ खड़े रहने की परंपरा बढ़ी। लोकगीतों में समानता, प्रेम और मानवता के भावने लगे, जिनमें हर वर्ग और हर व्यक्ति की भागीदारी दिखाई देने लगी। त्योहारों और सामाजिक आयोजनों में सबको साथ लेकर चलने की परंपरा विकसित हुई, जहाँ जाति-पाति का भेद कम होता गया। इस तरह यह विचार केवल उपदेश तक सीमित नहीं रहा, बल्कि छत्तीसगढ़ी जीवन-शैली, संस्कृति और सामाजिक सोच का अभिन्न हिस्सा बन गया, जिसने समाज को अधिक मानवीय, संवेदनशील और एकजुट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। "गुरु घासीदास जी के इस संदेश ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को समता और मानवता का आधार दिया,"[8] जो आज भी समाज को जोड़ने का काम कर रहा है।

सतनाम पंथ और छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक प्रतीक

सतनाम पंथ की स्थापना से छत्तीसगढ़ी संस्कृति को एक अलग और मजबूत पहचान मिली । इस पंथ ने लोगों को सत्य, समानता और मानवता के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। "सतनाम पंथ से जुड़ा जैतखाम आज छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख प्रतीक बन चुका है। जैतखाम केवल एक धार्मिक चिन्ह नहीं है, बल्कि यह समाज में बराबरी, सत्य और न्याय का संदेश देता है"[9]। सतनाम पंथ के लोकगीत, भजन और सामूहिक प्रार्थनाएँ धीरे-धीरे छत्तीसगढ़ी लोक-संस्कृति का एक मजबूत और जरूरी हिस्सा बन गईं। ये गीत और भजन केवल ईश्वर की भक्ति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनमें जीवन जीने की सच्ची सीख छिपी होती है। इनमें सत्य, प्रेम, समानता, मेहनत और मानवता जैसे भाव सरल शब्दों में गाए जाते हैं, जिन्हें आम लोग आसानी से समझ लेते हैं। गाँव-गाँव में होने वाले सतनाम सत्संग, भजन-कीर्तन और सामूहिक प्रार्थनाओं में हर वर्ग, हर उम्र और हर समुदाय के लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ बैठते हैं और भाग लेते हैं। इससे लोगों के बीच दूरी कम होती है और आपसी मेलजोल बढ़ता है। इन आयोजनों का सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि समाज में एकता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। लोग एक-दूसरे को सम्मान की नजर से देखने लगते हैं और साथ मिलकर रहने की आदत विकसित होती है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की भाषा, धुन और भाव में स्थानीय जीवन, खेत-खलिहान, प्रकृति और श्रम की झलक मिलती है, जिससे आम लोगों को अपनी संस्कृति से जुड़ाव महसूस होता है। सतनाम पंथ ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को केवल आध्यात्मिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी समृद्ध किया। इसने आम लोगों को सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़ा, उन्हें

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

अपनी बात कहने और अपनी पहचान बनाए रखने का अवसर दिया। इस प्रकार सतनाम पंथ की लोकपरंपराएँ समाज को जोड़ने और संस्कृति को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

आडंबर-मुक्त सांस्कृतिक परंपरा

गुरु घासीदास जी ने समाज में फैले पाखंड, मूर्तिपूजा और दिखावटी कर्मकांडों का खुलकर विरोध किया। उनका मानना था कि सच्ची पूजा बाहर नहीं, बल्कि इंसान के मन और व्यवहार में होती है। उन्होंने लोगों को समझाया कि केवल पूजा-पाठ करने से नहीं, बल्कि अच्छे कर्म और सच्चे जीवन से ही इंसान महान बनता है। उनके इस विचार का असर छत्तीसगढ़ी संस्कृति पर गहराई से पड़ा। लोगों में मन की शुद्धता, ईमानदारी और नैतिक जीवन को अधिक महत्व मिलने लगा। "संस्कृति केवल धार्मिक रस्मों तक सीमित न रहकर अच्छे आचरण और मानवीय मूल्यों का माध्यम बन गई"[10]। इस तरह गुरु घासीदास जी के पाखंड-विरोधी विचारों ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को सरल, स्वच्छ और नैतिक दिशा दी, जो आज भी समाज को सही रास्ता दिखा रही है, सर।

छत्तीसगढ़ी लोकजीवन में नैतिक मूल्यों का समावेश

छत्तीसगढ़ी लोकजीवन में गुरु घासीदास जी के उपदेशों का प्रभाव आज भी साफ-साफ दिखाई देता है। उन्होंने जो बातें कही थीं, वे केवल उपदेश बनकर नहीं रहीं, बल्कि धीरे-धीरे लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गईं। छत्तीसगढ़ के गाँवों और शहरों में आज भी लोग सत्य, अहिंसा, समानता, प्रेम और मानवता जैसे मूल्यों को बहुत महत्व देते हैं। आम आदमी अपने व्यवहार में ईमानदारी रखने की कोशिश करता है और गलत कामों से दूर रहने को अच्छा मानता है। यही सोच गुरु घासीदास जी के उपदेशों से जुड़ी हुई है। गुरु घासीदास जी ने हमेशा दूसरों की मदद करने और दुखी लोगों के साथ खड़े रहने की बात कही। इसका असर यह हुआ कि छत्तीसगढ़ी समाज में सहयोग और अपनापन आज भी दिखाई देता है। पड़ोसी का दुख हो या गाँव का कोई काम, लोग मिल-जुलकर साथ देते हैं। समाज में न्याय और समानता बनाए रखने की भावना भी मजबूत हुई है। जाति, ऊँच-नीच और भेदभाव जैसी बुराइयों को गलत माना जाता है और सभी को बराबर समझने की सीख दी जाती है। परिवार के स्तर पर भी गुरु घासीदास जी के उपदेशों का गहरा प्रभाव है। परिवार में बड़ों का सम्मान, छोटों के प्रति प्यार और आपसी समझ को महत्व दिया जाता है। रिश्तों में धैर्य, सहनशीलता और क्षमा का भाव रखा जाता है, जिससे परिवार और समाज दोनों मजबूत होते हैं। लोग एक-दूसरे की बात सुनते हैं और मिल-बैठकर समस्याओं का हल निकालने की कोशिश करते हैं। छत्तीसगढ़ी संस्कृति में सादगी और सहजता भी गुरु घासीदास जी की देन मानी जाती है। दिखावे से दूर रहना, मेहनत से जीवन चलाना और प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर रहना यहाँ के लोगों की पहचान है। लोकगीतों, पर्व-त्योहारों और सामाजिक परंपराओं में भी मानवता, भाईचारा और समानता के भाव साफ दिखाई देते हैं। इस तरह गुरु घासीदास जी के उपदेशों ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को और अधिक मानवीय, सरल और लोकमूल्यों से भरपूर बनाया है। ये मूल्य आज भी लोगों के सोच-विचार, व्यवहार और सामाजिक जीवन में जीवंत हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शन का काम कर रहे हैं

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में योगदान

गुरु घासीदास के विचारों ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को अपनी पहचान और आत्मसम्मान से जोड़ने का काम किया। उन्होंने लोगों को बराबरी, इंसानियत और आपसी सम्मान का महत्व समझाया। "समाज में भेदभाव के खिलाफ सोच मजबूत हुई और लोगों में सामाजिक जागरूकता आई"[11]। आज भी गुरु घासीदास जी के विचार छत्तीसगढ़ी समाज और संस्कृति में गहराई से रचे-बसे हुए दिखाई देते हैं। लोकगीतों में उनके बताए हुए सत्य, समानता, प्रेम और मानवता के संदेश साफ सुनाई देते हैं, जो लोगों को सही जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। छत्तीसगढ़ी लोकपरंपराओं और लोकनृत्यों में भी ये विचार जीवंत रूप में नजर आते हैं, जहाँ सब लोग मिलकर भाग लेते हैं और आपसी एकता का भाव प्रकट होता है। सामाजिक आंदोलनों में भी गुरु घासीदास जी के विचार मार्गदर्शन का काम करते हैं और लोगों को अन्याय, भेदभाव और असमानता के खिलाफ आवाज उठाने की ताकत देते हैं। छत्तीसगढ़ी लोग अपनी संस्कृति पर गर्व करते हैं, क्योंकि इसमें सादगी, अपनापन और इंसानियत की खुशबू है। यहाँ मिल-जुलकर रहने, एक-दूसरे का सम्मान करने और जरूरत पड़ने पर साथ देने को बहुत महत्व दिया जाता है। यही सोच गुरु घासीदास जी के उपदेशों से जुड़ी हुई है, जिन्होंने समाज को जोड़ने और संभालने का काम किया। उनके विचारों ने लोगों को यह सिखाया कि सच्ची संस्कृति वही है जो सबको साथ लेकर चले और किसी को पीछे न छोड़े। इस प्रकार गुरु घासीदास जी के विचारों ने छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाया। उन्होंने लोगों को जागरूक किया, उन्हें अपने अधिकार और कर्तव्यों को समझने की प्रेरणा दी और समाज को एक नई दिशा दी। आज भी उनके विचार जनमानस से जुड़े हुए हैं और बदलते समय में भी समाज को सही रास्ता दिखाने का काम कर रहे हैं।

निष्कर्ष

अंत में यह कहा जा सकता है कि गुरु घासीदास का व्यक्तित्व और उनके उपदेश छत्तीसगढ़ी संस्कृति को गढ़ने और आगे बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने लोगों को बराबरी, सच्चाई, नैतिकता और इंसानियत का रास्ता दिखाया। उनके विचारों से समाज में आपसी प्रेम, सम्मान और सहयोग की भावना मजबूत हुई। गुरु घासीदास ने केवल धार्मिक बातें ही नहीं सिखाईं, बल्कि लोगों के जीवन जीने के तरीके को भी बेहतर बनाया। इसलिए वे सिर्फ एक धार्मिक गुरु नहीं थे, बल्कि छत्तीसगढ़ी संस्कृति को आकार देने वाले महान मार्गदर्शक और सांस्कृतिक शिल्पकार भी थे।

संदर्भ ग्रंथ-सूची:

1. परिहार, महाराज सिंह. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य. आगरा अभय प्रकाशन, नवीन संस्करण, पृ. 19,20.

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 40-46

2. सोनी, जे.आर. सतनाम पोथी. रायपुर गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 112.
3. सोनी, जे.आर. सतनाम पोथी. रायपुर गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 120.
4. ढिढे, घनाराम सतनामी इतिहास एवं गुरु घासीदास जी का जीवन-दर्शन दुर्ग रू सत्य दर्शन संस्थान, प्रथम संस्करण 1993, पृ. 3.4.
5. पाठक, विनय कुमार लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के सेतु गुरु घासीदास. गुरु घासीदास स्मारिका, संस्करण 2002, पृ. 7. 8.
6. सतनाम, संत. सतनाम सागर, संस्करण 1928, पृ. 30, 31.
7. परिहार, महाराज सिंह. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य. आगरा अभय प्रकाशन, नवीन संस्करण, पृ. 19,20.
8. सोनी, जे.आर. सतनाम पोथी. रायपुर गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 129.
9. मनहर, राममहंत नम्मूराम, गुरु घासीदास जीवन-चरित्र भिलाई युग्मा कम्प्यूटर्स, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 118.
10. सोनी, जे.आर. सतनाम पोथी. रायपुर गुरु घासीदास साहित्य एव संस्कृति अकादमी, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 132, 133.
11. सोनी, जे.आर. सतनाम पोथी रायपुर गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, प्रथम संस्करण 2009, पृ 136, 137, 138.